प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी समस्या

डॉ. दीपा अंटिन
कर्नाटक- बेलगावी

प्रेमचंद युग के कथाकारों ने कथा साहित्य में स्त्री के चरित्र-चित्रण में त्याग,सेवा और बलिदान को महत्वपूर्ण स्थान दिया,लेकिन फिर भी वे स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता को अधिक मूल्य नहीं देते दिखते हैं।प्रेमचंद 1905 ई.से1936 ई. तक के रचनाकारों की रचनाओं में किसान जड, दरिद्रता ग्रस्त, उत्पीड़ित और अपने दुर्भाग्य पर रोनेवाला था।एक ओर तो जमींदारी प्रथा के विरुद्ध गाँव मे पुराना और निरंतर बढ़ने वाला असंतोष था,जो22-1920 के राष्ट्रीय आंदोलन में गहराया था।दूसरी ओर मजदूर वर्ग का उत्थान, तीसरी ओर स्त्री की दशा,जिसको प्रेमचंद अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान देते हैं।

प्रेमचंद जहाँ एक ओर समाज मे परिवर्तन की बात करते हैं,वही दूसरी ओर स्त्री की निजी चारित्रिक विशेषताओं पर भी ध्यान देते हैं।प्रेमचंद अपने उपन्यास" सेवा सदन"(1918)में स्त्री की समस्या को धृतक पर उभारा है।इसमें उन्होंने वेश्या जीवन के साथ समाज की रूढ़िवादिता, दहेजप्रथा, पारिवारिक कलह,स्त्री शिक्षा,अनमेल विवाह तथा उससे उत्पन्न विकृत स्थिति को समाज के सामने लाया।"सेवासदन"की एक पात्र सुमन एक रुपवती, गुण शीलता और पढ़ी लिखी लड़की है,जिसका विवाह कर दिया जाता है एक बदमिजाज और अनमेल पुरुष से।जहाँ एक अबला टूटकर बिखरजाति है,उसे पतित होकर जीना पड़ता है।सुमन चाहती है कि भोलीबाई उसके लिए एक किराय पर मकान का बंदोबस्त कर दे जिसमे रहकर वह शेष जीवन का निर्वाह कर सके।लेकिन उसे यह पता नहीं कि भारतीय समाज मे एक अबला अकेली मनचला पुरुष जाती से कब तक बच सकती है।शायद इसीलिए वह भोलीबाई की सहायता से नाचना-गाना सीखना चाहती है।सिर्फ इतना फर्क है कि वह वेश्या के कोठे पर बैठती है।जिस कारण समाज उसे सुमन बाई के नाम से जानती है।वेश्यावृत्ति के आधार तो यह माना गया है कि स्त्री सुख और धनोपार्जन केलिए अपने तन को मर्दो के बिस्तर तक ले जाती है।सुमन ने ऐसा नहीं किया, फिर भी पदमसिंह शर्मा और विट्ठलदास को इतनी ही चिंता होती है?अगर सुमन निम्न वर्ग की होती तो वेश्या बनकर कोठे में बैठ जाती फिर भी समाज के ठेकेदारों को इतनी ही चिंता होती है।कथानक में सुमन को एक ब्रह्मणी के रूप में प्रस्तुत करके समाज सेवियों पर गहरी चोट की है। सुमन सीधी-साधी स्त्री है साथ ही वह स्त्री एक वेश्या के कोठे को अपने जीवन यापन केलिए चुना है।यह शोचनीय विषय है सुमन सवर्ण यानी ब्राह्मण परिवार की लड़की है और इसने छोटी जाती की कुलटाओं जैसा काम किया है।इस स्थिति में सेवासदन में वेश्याओ को लेकर जो भी सुधारात्मक कार्य किया गया,उनके मूल में ब्राह्मणवाद है न कि वेश्या समस्या।

प्रेमचंद की और एक उपन्यास" गबन"की रचना करते समय मध्यवर्गीय जीवन के अंतर्विरोधों की ओर ही नहीं राष्ट्रीय सांस्कृतिक संकट,जो गुलामी की जंजीर में जकड़ी तथा स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान था।प्रेमचंद भारतीय ग्रामीण स्त्रीयों में आभूषणों के प्रति उसकी उत्कट चाह को भी उसकी असुरक्षा की भावना से जोड़ते हैं लेकिन वह अशिक्षित है,आर्थिक स्थिति भी कमजोर है।प्रेमचंद रतन के द्वारा भारतीय स्त्री की दशा को स्पष्ट करते हैं।रतन उच्च मध्यवर्गीय की स्त्री है उसके पास कोठी गाड़ी और तमाम सुख सुविधा उसके पति के कारण है।लेकिन उसके पति के मरते ही उसके पैरों के नीचे से धरती ही खिसक जाती है।रतन की पति रमानाथ के परिवार के लोग उसकी सारी संपत्ति पर अधिकार जमाकर उसे सड़क पर खड़ा कर देते हैं।अधिकारहीन स्त्री के प्रति प्रेमचंद पर्याप्त दयावान है और उन्होंने उसकी इस समस्या को बड़े गंभीर रूप में ग्रहण किया है। प्रेमचंद अपने और एक उत्कृष्ट उपन्यास"निर्मला"में भी स्त्री दशा को अनमेल विवाह,दहेज प्रथा के साथ-साथ प्रेम की विफलता को दिखाते हैं।जिसमे स्त्री जीवन की समस्या सामाजिक समस्या के रूप में व्यक्ति के सामने है।सैक्स के संबंध में तो भारतीय समाज अभी भी कुंठित है,जिसकी मान्यताओं को तोड़ पाना इस समाज केलिए असंभव है।इसमें यौन-दमन और यौन-शोषण भी बड़े आकार में है।इसलिए प्रेमचंद ने विवाह को एक मुख्य भारतीय समस्या के रूप में उठाया।क्योंकि इसमें आर्थिक और यौन संकट का संबंध अधिक स्पष्ट है।प्रेमचंद निर्मला की ओर से कहते हैं कि अनमेल विवाह कोई व्यक्तित्व समस्या नहीं है वरन एक सामाजिक रोग है,जिसका स्थायी उपचार होना चाहिए।यहाँ प्रेमचंद अपने कथानक में कहते हैं कि वैवाहिक समस्या का हल बिना समाज के विचार और आर्थिक स्थिति के बदले नहीं हो सकती।निर्मला उपन्यास में आखिर निर्मला की शादी एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति तोताराम से कर दी जाती है फिर भी निर्मला भारतीय स्त्री के अनुसार पति कर्तव्य करती है पर उसकी मानसिक स्थिति अत्यंत दयनीय है।वह अपने जीवन के तमाम संकट से समझौता करती है।निर्मला की दशा सम्पूर्ण भारतीय समाज की स्त्री की दशा की ओर संकेत है तभी तो निर्मला अपनी वेदना, घुटन के कड़वे घूँट पीकर भी,अतृप्त कामनाओं को हमेशा केलिए दबाकर रखती है और यही कारण है कि अपने स्वतंत्र भावनाओं को नहीं दिखा पाती।निर्मला अपने पति के साथ पतिव्रता का धर्म निभाना चाहती है लेकिन उसके पति उसे शंकाल की नजर से देखकर निर्मला को पति से घृणा केलिए बाध्य करता है फिर पतिव्रता के कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर वह अपने पति का संदेह दूर करने केलिए प्राणों की बाजी लगा देती है।किंतु समाज उनको कोई मूल्य नहीं देता।ऐसी स्थिति में निर्मला के जीवन में जो भी वैषम्य आता है उसको नारी- मन के पारखी प्रेमचंद ने बड़े सशक्त रूप से व्यक्त किया है।कर्तव्य की वेदी पर उसने अपना जीवन और अपनी सारी कामनाएं होम कर दी थी।

निष्कर्ष:-

कुल मिलाकर प्रेमचंदजी की कथा साहित्य में नारी का जीवन अग्निपरीक्षा केलिए ही बना है यह स्पष्ट होते हुए दिखाई पड़ता है।प्रेमचंद युग मे स्त्री की दशा को संवारने केलिए किसीने कलम उठाया तो वह है प्रेमचंद।उन्होंने स्त्री की भावना को,उसके सुख-दुख को,उसकी दमन प्रवृत्तियों को,उसकी वासनावों को समाज के सामने रखा।इन्होंने पतिज्ञा में विधवा समस्या व वनिता आश्रम की स्थापना, सेवासदन में वेश्यावृत्ति के मूल कारणों को,निर्मला में अनमेल विवाह के साथ-साथ,गोदान में होरी और धनिया के जीवन की दुखांत गाथा को सफलता पूर्वक चित्रित किया है।प्रेमचंद अपनी कहानियों के जरिए भी स्त्री के माँ, बहन,प्रेमिका और पत्नी आदि के रूपों का चित्रण सहज भाव से करते हैं क्योंकि उनकी निगाह में स्त्री कभी हीन नहीं रही।

****

संदर्भ ग्रंथ:

1.नारी चिंतन एक मूल्यांकन लेखक:डॉ शंकर तेरदाल
2.इंटरनेट।